ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

# आर्य मार्तण्ड

❖❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 94 अंक : 7
शुक्लपक्ष दशमी
विक्रम संवत् 2076
कलि संवत् 5120
5 जनवरी से 21 जनवरी 2020
दयानन्दाब्द : 195
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,120
मुख्य सम्पादक :
श्री देवेन्द्र कुमार : 9352547258
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आचार्य रविशंकर आर्य, बयाना
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री अशोक कुमार शर्मा, मोतीकटला
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
श्री देवेन्द्र कुमार सम्पादक, आर्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018
मुद्रक :– वी. के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा, जयपुर
ग्राफिक्स : वी. के. प्रिन्टर्स जयपुर।
ई–मेल :
aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

## पण्डित सत्यानन्द जी वेदवागीश का निधन

### भावभरी श्रद्धांजलि

दिनाँक 23 दिसम्बर 2019 के दिन जयपुर में प्रातःकाल 7:15 बजे पूज्य पण्डित जी का निधन हुआ। वे कई दिनों से अस्वस्थ थे। उनके सुपुत्र जांच हेतु जोधपुर से जयपुर ले आये थे। वे प्रातः स्नानागार में अचानक गिर गए, उनके बड़े पुत्र श्रुतिधर आर्य ने उन्हें संभाला तथा कुछ देर बाद विस्तर पर बैठे अचानक लुढ़क गए, निष्प्राण हो गए स्तब्ध पुत्र श्रुतिधर आर्य एवं माता सुमित्रा जी ने जैसे तैसे स्वयं को संभाला एवं आर्य जगत् को सूचित किया। आर्य समाज वैशाली नगर के सदस्य श्री राजेश आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान मंत्री श्री देवेन्द्र शास्त्री तत्काल आचार्य जी के आवास पर पहुँचे, दोपहर दो बजे उनका पार्थिव शरीर आर्य प्रतिनिधि सभा राजापार्क सभा भवन में आर्य जनता के दर्शनार्थ रखा गया। सायं 4 बजे उनकी महाप्रयाण यात्रा आदर्श नगर अन्तेष्टि स्थल पहुँची, जहाँ परिवार के सदस्य एवं आर्य समाज, परोपकारिणी सभा, महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सदस्यों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में वैदिक रीति से अन्तेष्टि संस्कार किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य वीर दल राजस्थान आपको विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है। आर्यजगत् को परमेश्वर दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान



योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

# आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश
# श्रद्धासुमन, अंत्येष्टि एवं श्रद्धांजलि सभा

## सूचना

आर्य मार्तण्ड का आगामी फरवरी प्रथम अंक आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश श्रद्धान्जलि अंक के रुप में प्रकाशित किया जा रहा है, अतः सुधी पाठक आचार्य श्री से सम्बन्धित संस्मरण, लेख, स्मृति, चित्र आदि सामग्री दिनांक 25 जनवरी तक भेज सकते हैं।

**सम्पादक**



कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

## आर्य जगत् ने खो दिया महान् वैयाकरण

करें।

पण्डित जी का जन्म १० अक्टूबर १९३३ को राजस्थान में अजमेर जिले की लीडी नामक ग्राम में श्री ओंकार सिंह आर्य एवं श्रीमती सुगनी बाई के कृषक परिवार में हुआ। आरम्भिक शिक्षा लीडी में होने के पश्चात् सन् १९४३ में स्वामी व्रतानंद जी के गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश लिया यहाँ आपने निरन्तर १४ वर्ष तक पाणिनीय व्याकरण (महाभाष्य पर्यन्त), निरुक्त, छन्द, दर्शन एवं वेदादि शास्त्रों का आर्ष विद्या का अध्ययन किया और वेदवागीश की उपाधि प्राप्त की आपके प्रमुख गुरुजन पं.शोभित मिश्र, पं.शंकरदेव जी, पं.भीमसेन जी आदि थे गुरुकुलीय शिक्षा के पश्चात् आपने एम. ए. आदि की राजकीय परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

आपने विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन कार्य किया साथ ही जिज्ञासु छात्रों को अष्टाध्यायी – महाभाष्य की पद्धति से पढ़ाने की प्रक्रिया सतत बनी रही कुछ काल तक परोपकारिणी सभा में ऋषि दयानन्द के ग्रंथों के संशोधन का दायित्व भी सम्भाला

आप संस्कृत व्याकरण के प्रौढ़ विद्वान एवं उत्तम वक्ता बहुत काल तक आप स्वतंत्र रूप से धर्मोपदेश तथा संस्कारादि कृत्य करते करवाते रहे आचार्य निरञ्जन देव – (शङ्कराचार्य) आदि से आपके अनेक शस्त्रार्थ हुए आपने पीराणा सम्प्रदाय के आचार्यों के साथ भी शास्त्रार्थ किया

आपने नामनिधि, अंत्येष्टि संस्कार, पाणिनीय शब्दानुशासनम्, दयानन्द वेदभाष्य – भावार्थ प्रकाश (दो खण्ड), बुद्धि निधि, दयानन्द दृष्टान्त निधि, सुक्तिनिधि, भक्ति–सत्संग–कीर्तन, वेदसाहाय्यनिधि आदि ग्रन्थ लिखे हैं आपने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का सम्पादन भी किया।

आप आर्य समाज – गांधीधाम, गुजरात संचालित जीवन–प्रभात में वानप्रस्थ आश्रम में रहे। गुरुकुल आबूपर्वत में भी अध्यापन करवाया। वर्तमान में आप जोधपुर स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में रहकर अपने स्वाध्याय, चिंतन, प्रवचन,लेखन आदि कर रहे थे।

९६ वर्ष की अवस्था में भी आप सतत लेखन स्वाध्याय आदि में व्यस्त रहते थे जो की हमारे जैसे युवाओं के लिए प्रेरणाप्रद थे

## आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन।

जयपुर स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यालय राजा पार्क में संस्कृत के महान् विद्वान् पंडित सत्यानन्द वेदवागीश के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित कर सभी आर्यजनों ने उनके जीवन से प्रेरणा लेने का संकल्प किया। श्रद्धाञ्जलि सभा के प्रारम्भ में आर्य वीर दल राजस्थान के प्रान्तीय महामंत्री गगेन्द्र शास्त्री ने आचार्यवर के सादगीपूर्ण जीवनपरिचय से सभी को अवगत करवाया। पंडित सत्यानन्द ने अनेक राज्यों में प्रवास कर विद्यालयों व प्रबुद्धजनों को अपने बौद्धिक प्रवचनों का लाभ प्रदान किया। आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत को सात माह पूर्व अपना समस्त समृद्ध पुस्तकालय अलमारी सहित सप्रेम भेंट किया। आर्य वीर दल राजस्थान प्रान्त के पूर्व बौद्धिकाध्यक्ष ने सम्पूर्ण जीवन काल में वेद, संस्कृत, साहित्य, व्याकरण, इतिहास आदि पर ग्रन्थ लिखे एवं प्रवचन दिये। राजकीय सेवा से मध्य में त्यागकर आचार्य ने भारत के अनेक प्रान्तों में जाकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार– प्रसार किया। वे स्वयं को 86 वर्ष का युवा कहते थे। सदैव कमर सीधी रखकर बैठते थे। परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ वेदपाल, मन्त्री कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष सुभाष नवाल ने सभा के न्यासी रहे सत्यानन्द वेदवागीश को गुरुकुल चित्तौड़गढ से अध्ययन कर निकले व्याकरणज्ञाता, उत्तम लेखक, विचारक, सिद्धान्तवादी, मनोविनोदी,ऋषि के सच्चे भक्त एवं कर्मनिष्ठ बताया। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री देवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि अजमेर जिले से दो महान् वैयाकरणों का आर्यजगत् के साथ संस्कृतक्षेत्र में लाभ मिला। पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक व पण्डित सत्यानन्द वेदवागीश रुपी रत्न पाकर हम धन्य हुए। सभा के कोषाध्यक्ष एवं श्रद्धाञ्जलि सभा के संचालक डॉ सन्दीपन ने उनके संस्मरण सुनाते हुए कहा कि आचार्य किसी भी परिस्थिति में दैनिक सन्ध्योपासना को अवश्य करते थे। दिल्ली में एक विवाहोत्सव में संध्याकाल होते ही ब्रह्मयज्ञ के मन्त्रोच्चारण प्रारम्भ कर दिये। परोपकारिणी सभा के पूर्व मंत्री डॉ धर्मवीर के साथ रेलयात्रा में पांच घंटों तक श्लोकों की अन्त्याक्षरी चलती रही। गुरुकुल कांगडी के पूर्व कुलपति एवं मनुस्मृति के भाष्यकार डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने बताया कि योगगुरु स्वामी रामदेव के आग्रह पर आस्था चैनल हेतु 2006 वर्ष में वैदिक विद्वानों के प्रवचनों की वीडियो रिकॉन्डिंग में अनेक घंटों तक आचार्यप्रवर के निरन्तर व्याख्यान चलता था। डॉ. कृष्णपाल ने पण्डित को महान् शास्त्रार्थ महारथी बताते हुए जोधपुर में निरञ्जन देव को पराजित करने का संस्मरण सुनाया। आचार्य रामपाल ने सत्यानन्द को देवयज्ञ में संस्कृतमन्त्रों के शुद्धोच्चारण में, स्वलिखित ग्रन्थों को निःशुल्क भेजने में सदैव क्रियाशील बताया। वासुदेव आर्य, सत्यवीर आर्य, अशोक शर्मा, पं. भगवानसहाय वाचस्पति, देवदत्त शर्मा तथा डी.ए.वी. के पूर्व निदेशक एम एल गोयल ने आचार्य सत्यानन्द को धर्म, संस्कृत, वैदिक संस्कृति रक्षक, दैनिक यज्ञ की प्रेरणा देने वाले, मधुरभाषी, वक्तृत्वकला में कुशल, वेदभाष्य में अग्रणी, युवाओं के प्रेरणास्रोत तथा स्वाध्यायशील बताया। आचार्य के सुपुत्र श्रुतिधर ने सभी आगन्तुकों को पिता के प्रति आत्मीयतापूर्ण व्यवहार के लिए आभार व्यक्त किया। उनके लिखित ग्रन्थों को सभी आर्यसमाजों को भेजेंगे। जिससे उनके विचार जीवित रह सके। श्रद्धाञ्जलि सभा में जयपुर के समस्त आर्यसमाजों, अन्य संस्थाओं, दैनिक भास्कर के जगदीश शर्मा, राजार्य सभा दिल्ली, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन जोधपुर,सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आदि के द्वारा विनम्र सन्देश प्रेषित किये गए। श्रद्धाञ्जलि सभा के समापन पर आचार्य के परिवारजनों ने उनके सुपुत्रों को पगड़ी पहनाकर, दो मिनट का मौन रखकर शान्तिपाठ किया।

# आर्ष ज्ञान एवं गुरूकुल परम्परा के संस्थापक आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द

वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति, और आर्य जाति की रक्षा के लिए, मरणासन्न अवस्था से उसे पुनः प्राणवान् एवं गतिवान् बनाने के लिए और उसे सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाने के लिये आर्य समाज ने सैंकड़ों बलिदान दिए हैं। और उसमें प्रथम पंक्ति के प्रथम पुष्प हैं स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती। जिनका 23 दिसम्बर को बलिदान दिवस है स्वामी श्रद्धानंद का नाम देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले उन महान बलिदानियों में बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बगैर खुद को देश–समाज के लिये समर्पित कर दिया। धर्म, संस्कृति और देश पर बलिदान होना सबसे बड़ा कर्म माना जाता है और यह तब और भी बड़ा हो जाता है जब ये महान् कार्य बगैर किसी स्वार्थ के किए जाएं।

स्वामी श्रद्धानंद ऐसे ही निस्वार्थ कार्य करने वाले महान धर्म और कर्म योद्धा थे। उनका श्रद्धानंद नाम उनके काम के मुताबिक पूरी तरह सही बैठता है। उन्होंने स्वराज्य हासिल करने, देश को अंग्रेजी दासता से छुटकारा दिलाने और विधर्मी बने हिंदुओं का शुद्धिकरण करने, दलितों को उनका अधिकार दिलाने और पश्चिमी शिक्षा की जगह वैदिक शिक्षा प्रणाली गुरुकुल के मुताबिक शिक्षा का प्रबंध करने जैसे अनेक कार्य करने मे स्वयं को तिल तिल गला दिया।

18वीं शती में हिंदू और मुसलमानों का यदि कोई सर्वमान्य नेता था तो वे स्वामी श्रद्धानंद ही थे। 4 अप्रैल 1919 को मुसलमानों ने स्वामी जी को अपना नेता मानकर भारत की सबसे बड़ी ऐतिहासिक जामा मस्जिद के बिम्बर पर बैठाकर स्वामी जी का सम्मान किया था। दुनिया की यह महज एक घटना है जहां मुसलमानों ने गैर मुस्लिम को मस्जिद की बिम्बर पर उपदेश देने के लिए कहा। स्वामी जी ने अपना उपदेश त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शत् क्रतो बभूविथ वेद मंत्र से शुरु किया और शांति पाठ के साथ अपने उपदेश को सम्पन्न किया।

महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य भक्त और उनके उद्देश्यों के प्रति पूर्णतः समर्पित, क्रांतिकारी विचारों के निष्ठावान समाज–सुधारक श्रद्धानंद का जन्म 22 फरवरी सन् 1856 (फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, विक्रम संवत् 1913) को पंजाब प्रान्त के जालंधर जिले के पास बहने वाली सतलुज नदी के किनारे बसे प्राकृतिक सम्पदा से सुसज्जित तलवन नगरी में हुआ था। उनके पिता, लाला नानक चन्द, ईस्ट ईण्डिया कम्पनी द्वारा शासित यूनाइटेड प्रोविन्स (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में पुलिस अधिकारी थे।

उनके बचपन का नाम बृहस्पति और मुंशीराम था, किन्तु मुन्शीराम सरल होने के कारण अधिक प्रचलित हुआ। वे पढ़ने में मेधावी परन्तु बड़े ही उदंड स्वभाव के थे पिता का ट्रान्सफर अलग–अलग स्थानों पर होने के कारण उनकी आरम्भिक शिक्षा अच्छी प्रकार नहीं हो सकी। काशी विश्वनाथ मंदिर के कपाट सिर्फ रीवा की रानी के लिए खोलने और साधारण जनता के लिए बंद किए जाने व एक पादरी के व्यभिचार का दृश्य देख मुंशीराम का धर्म से विश्वास उठ गया और वह बुरी संगत में पड़ गए और हर किस्म की बुरी आदतों का शिकार हो गये सच तो ये है कि स्वामी श्रद्धानंद उर्फ मुंशीराम उन महापुरुषों में से एक हैं जिनका जन्म ऊंचे कुल में होने के बावजूद प्रारंभिक जीवन की बुरी लतों के कारण बहुत ही निकृष्ट किस्म का था।

बालक के नास्तिक होने के कारण पिता जी बड़े ही असहज महसूस करते थे और इस चिंता मे रहते थे कि कैसे पुत्र को बुराइयों से दूर कर धर्म के मार्ग पर लाएँ सम्वत् 1936 में महर्षि दयानंद सरस्वती बरेली पधारे तो नानकचन्द भी अपने पुत्र मुंशीराम को आग्रहपूर्वक साथ लेकर स्वामी दयानन्द का प्रवचन सुनने पहुंचे। उनके उपदेशो को सुनकर मुंशीराम प्रभावित ही नहीं हुए बल्कि उनके प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न हो गया स्वामी दयानन्द जी के तर्कों और आशीर्वाद ने मुंशीराम को दृढ़ ईश्वर विश्वासी तथा वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बना दिया और वे आर्यसमाज के निकट आ गए स्वामी दयानंद सरस्वती के साथ बरेली में हुए सत्संग ने उन्हें जीवन का अनमोल आनंद दिया, जिसे उन्होंने सारे संसार को वितरित किया।

अपनी जीवन गाथा कल्याण मार्ग का पथिक में उन्होंने लिखा था–

"ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो चुके, परंतु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पटलपर अब तक ज्यों–की–त्यों है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते–गिरते तुम्हारे स्मरणमात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है। परंतु अपने विषय में मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे सत्संग ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा लाभ करने के योग्य बनाया।''

मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद  बनाने तक का उनका सफ़र पूरे विश्व के लिए प्रेरणादायी है। स्वामी दयानंद सरस्वती से हुई एक भेंट और पत्नी शिवादेवी के पतिव्रत धर्म तथा निश्छल निष्कपट प्रेम व सेवा भाव ने उनके जीवन को क्या से क्या बना दिया।

वकालत के साथ आर्य समाज के जालंधर जिला अध्यक्ष के पद से उनका सार्वजनिक जीवन प्रारम्भ हुआ महर्षि दयानंद के महाप्रयाण के बाद उन्होने स्वयं को स्वदेश, स्व–संस्कृति, स्व–समाज, स्व–भाषा, स्व–शिक्षा, नारी कल्याण, दलितोत्थान, स्वदेशी प्रचार, वेदोत्थान, पाखंड खडंन, अंधविश्वास उन्मूलन और धर्मोत्थान के कार्यों को आगे बढ़ाने मे पूर्णत समर्पित कर दिया। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना, अछूतोद्धार, शुद्धि, सद्धर्म प्रचार पत्रिका द्वारा धर्म प्रचार, सत्य धर्म के आधार पर साहित्य रचना, वेद पढने व पढ़ाने की व्यवस्था करना, धर्म के पथ पर अडिग रहना, आर्य भाषा के प्रचार तथा उसे जीवीकोपार्जन की भाषा बनाने का सफल प्रयास, आर्य जाति के उन्नति के लिए हर प्रकार से प्रयास करना आदि ऐसे कार्य हैं जिनके फलस्वरुप स्वामी श्रद्धानंद अनंत काल के लिए अमर हो गए।

1922 में अंग्रेजी सरकार ने गिरफ्तार किया, लेकिन उनकी गिरफ्तारी कांग्रेस के नेता होने की वजह से नहीं बल्कि सिक्खों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए सत्याग्रह करते हुई। कांग्रेस में तुष्टीकरण के महात्मा गांधी के विचारों से मतभेद होने की वजह से उन्होंने त्यागपत्र दिया था। लेकिन देश की स्वतंत्रता के लिए लगातार कार्य करते रहे। हिंदू–मुस्लिम एकता के लिए स्वामी जी ने जितने कार्य किए, उस वक्त शायद ही किसी ने अपनी जान जोखिम में डालकर किए हो। वे ऐसे महान् युगचेता महापुरुष थे जिन्होंने युग की धड़कन को पहचानकर समाज के हर वर्ग में जनचेतना जगाने का कार्य किया। धर्म के सही स्वरूप को महर्षि दयानंद ने जनता में

जिस प्रकार स्थापित किया था, स्वामी श्रद्धानंद ने उसे आगे बढ़ाने का निडरता के साथ कदम बढ़ाया।

महर्षि दयानंद ने राष्ट्र सेवा का मूलमंत्र लेकर आर्य समाज की स्थापना की। कहा कि 'हमें और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें'। स्वामी श्रद्धानंद ने इसी को अपने जीवन का मूलाधार बनाया। समाज सुधारक के रूप में उनके जीवन का अवलोकन करें तो पाते हैं कि उन्होंने प्रबल विरोध के बावजूद स्त्री शिक्षा के लिए अग्रणी भूमिका निभाई।

स्वयं की बेटी अमृतकला को जब उन्होंने 'ईसा–ईसा बोल, तेरा क्या लागेगा मोल ' गाते हुए सुना तो घर घर जाकर चंदा इकट्ठा कर गुरुकुल कांगडी विश्वविालय की स्थापना हरिद्वार में कर अपने बेटे हरीश्चंद्र और इंद्र को सबसे पहले प्रवेश करवाया। स्वामी जी का विचार था कि जिस समाज और देश में शिक्षक स्वयं चरित्रवान नहीं होते उसकी दशा अच्छी हो ही नहीं सकती। उनका कहना था कि हमारे यहाँ टीचर हैं, प्रोफ़ेसर हैं, प्रिसिंपल हैं, उस्ताद हैं, मौलवी हैं पर आचार्य नहीं हैं। आचार्य अर्थात् आचारवान व्यक्ति की महती आवश्यकता है। चरित्रवान् व्यक्तियों के अभाव में महान् से महान् व धनवान से धनवान् राष्ट्र भी समाप्त हो जाते हैं।

जात–पात व ऊंच–नीच के भेदभाव को मिटाकर समग्र समाज के कल्याण के लिए उन्होंने अनेक कार्य किए। प्रबल सामाजिक विरोधों के बावजूद अपनी बेटी अमृत कला, बेटे हरिश्चद्र व इंद्र का विवाह जात–पात के समस्त बंधनों को तोड कर कराया। उनका विचार था कि छुआछूत को लेकर इस देश में अनेक जटिलताओं ने जन्म लिया है तथा वैदिक वर्ण व्यवस्था के द्वारा ही इसका अंत कर अछूतोद्धार संभव है।

वह हिन्दी को राष्ट्र भाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि के रूप में अपनाने के पक्षधर थे। सद्धर्म प्रचारक नामक पत्र उन दिनों उर्दू में छपता था। एक दिन अचानक ग्राहकों के पास जब यह पत्र हिंदी में पहुंचा तो सभी दंग रह गए क्योंकि उन दिनों उर्दू का ही चलन था। त्याग व अटूट संकल्प के धनी स्वामी श्रद्धानंद ने यह घोषणा की कि जब तक गुरुकुल के लिए 30 हजार रुपए इकट्ठे नहीं हो जाते तब तक वह घर में पैर नहीं रखेंगे। इसके बाद उन्होंने भिक्षा की झोली डाल कर न सिर्फ़ घर–घर घूम 40 हजार रुपये इकट्ठे किए बल्कि वहीं डेरा डाल कर अपना पूरा पुस्तकालय, प्रिंटिंग प्रेस और जालंधर स्थित कोठी भी गुरुकुल पर न्योछावर कर दी।

उनका सर्वाधिक महानतम कार्य था, वह शुद्धि सभाओं का गठन उनका विचार था कि अज्ञान, स्वार्थ व प्रलोभन के कारण धर्मांतरण कर बिछुड़े स्वजनों की शुद्धि करना देश को मजबूत करने के लिए परम आवश्यक है, इसलिये जहाँ–जहाँ आर्य समाज थे, वहाँ–वहाँ शुद्धि सभाओं का गठन कराया गया और धीरे धीरे शुद्धि के इस प्रयास ने आन्दोलन का रूप ले लिया स्वामी जी ने पश्चिम उत्तर प्रदेश के 89 गांवों के हिन्दू से मुसलमान बने सनातनियों को पुनः हिन्दू धर्म में शामिल कर आदि गुरु शंकराचार्य के द्वारा शुरू की परंपरा को पुनर्जीवित किया और समाज में यह विश्वास उत्पन्न किया की जो विधर्मी हो गए हैं, वे सभी वापस अपने हिन्दू धर्म में आ सकते हैं देश में हिन्दू धर्म में वापसी के वातावरण बनने से इस तरह के प्रयासों की एक लहर सी आ गयी

एक बार शुद्धि सभा के प्रधान को उन्होंने पत्र लिख कर कहा कि 'अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करूं ' उन्होने भारतीय हिंदू शुद्धि सभा की स्थापना कर दो लाख से अधिक मलकानों को शुद्ध किया और यही उनके लिये घातक सिद्ध हो गया कुछ कट्टरपंथी मुसलमान इनके शुद्धिकरण के कार्य के खिलाफ हो गए थे और उनके बनाये दूषित माहौल के चलते एक धर्मांध मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद ने छल से 23 दिसम्बर 1926 को चांदनी चौक दिल्ली में गोलियों से भूनकर हत्या कर दी। इस तरह धर्म, देश, संस्कृति, शिक्षा और दलितोत्थान का यह युगधर्मी महामानव मानवता के लिए शहीद हो गया।

वह निराले वीर थे। लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कहा था 'स्वामी श्रद्धानंद की याद आते ही 1919 का दृश्य आंखों के आगे आ जाता है। सिपाही फ़ायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोल कर आगे आते हैं और कहते हैं– ' लो, चलाओ गोलियां '। इस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं होगा? ' महात्मा गांधी के अनुसार 'वह वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग शैय्या पर नहीं, परंतु रणांगण में मरना पसंद करते हैं। वह वीर के समान जीये तथा वीर के समान मरे'।

उन्होने गुरुकुल प्रारंभ करके देश में पुनः वैदिक शिक्षा को प्रारंभ कर महर्षि दयानंद द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार किया व उन्हें कार्यरूप में परिणत किया और उनके जरिए देश, समाज और स्वाधीनता के कार्यों को आगे बढ़ाने के युगांतरकारी कार्य किए। शुद्धि आंदोलन के जरिए विधर्मी जनों को आर्य(हिंदू) बनाने के लिए आंदोलन चलाए। दलितों की भलाई के कार्य को निडर होकर आगे बढ़ाया, साथ ही कांगेस के स्वाधीनता के आंदोलन का बढ़–चढ़कर नेतृत्व भी किया। कांग्रेस में उन्होंने 1919 से लेकर 1922 तक सक्रिय रूप से अपनी महत्त्वपूर्ण भागीदारी की।

राष्ट्र धर्म को बढ़ाने के लिए वे चाहते थे कि, "प्रत्येक नगर में एक ' हिंदू–राष्ट्र मंदिर" होना चाहिए जिसमें 25 हजार व्यक्ति एक साथ बैठ सकें और वहां वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत आदि की कथा हुआ करे। मंदिर में अखाड़े भी हों जहां व्यायाम के द्वारा शारीरिक शक्ति भी बढ़ाई जाए। प्रत्येक हिन्दू राष्ट्र मंदिर पर गायत्री मंत्र भी अंकित हो।"

देश की अनेक समस्याओं तथा हिंदोद्धार हेतु उनकी एक पुस्तक ' हिंदू सॉलिडेरिटी–सेवियर ओफ़ डाइंग रेस 'अर्थात् ' हिंदू संगठन मरणोन्मुख जाति का रक्षक ' आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही है। राजनीतिज्ञों के बारे में स्वामी जी का मत था कि भारत को सेवकों की आवश्यकता है लीडरों की नहीं। श्री राम का कार्य इसीलिए सफ़ल हुआ क्योंकि उन्हें हनुमान जैसा सेवक मिला। स्वामी दयानन्द का कार्य अधूरा पड़ा है जो तभी पूरा होगा जब दयानन्द रूपी राम को भी हनुमान जैसे सेवक मिलेंगे। वह सच्चे अर्थों में स्वामी दयानन्द के हनुमान थे जो राष्ट्र की सेवा के लिए तिल–तिल कर जले। महर्षि दयानन्द के इस अपूर्व सेनानी को शत शत नमन एवम् विनम्र श्रद्धांजलि भारतीय महापुरुषों पर लेखक की राष्ट्र आराधक श्रृंखला पठनीय है।



**इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।**

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

## शोक समाचार

1. रामेश्वर दयाल आर्य (सहायक अभि.से.नि. माही डेम) आर्य समाज रावतभाटा के संस्थापक एवं आर्य समाज माही डेम बांसवाड़ा के संरक्षक तथा आर्य समाज बांसवाड़ा के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। इनका निधन दिनांक 22 दिसम्बर 2019 को हो गया। अन्तिम संस्कार श्री जीववर्धन शास्त्री के द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

2. आर्य जगत में वेद, व्याकरण दर्शनशास्त्र और कर्मकाण्ड के मूर्धन्य वैदिक विद्वान् आचार्य सत्यानन्द जी का 23 दिसम्बर 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार आदर्श नगर शमशान घाट जयपुर में डॉ. कृष्णपाल जी आर्य एवं डॉ. रामपाल आर्य द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से आर्य प्रतिनिधि सभा के सानिध्य में किया गया। इनकी श्रद्धान्जलि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान में दिनांक 25 दिसम्बर 2019 को एवं अन्तर्राष्ट्रीय श्रद्धान्जलि सभा दिनांक 29 दिसम्बर 2019 को स्मृति भवन जोधपुर में रखी गई।

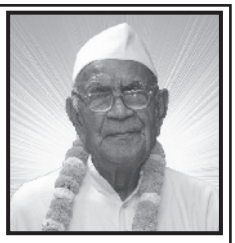

3. श्रीमती शान्तादेवी आर्य समाज महामन्दिर के प्रधान हेमसिंह जी की माता का दिनांक 24 दिसम्बर 2019 को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

4. महिला आर्य समाज मानसरोवर जयपुर की सदस्या श्रीमती रेखा शर्मा का दिनांक 25 दिसम्बर 2019 को निधन हो गया जिनका पूर्ण वैदिक रीति से अन्तष्टि संस्कार किया गया।

5. आर्य समाज मानसरोवर जयपुर के सदस्य श्री पूरणचन्द सिंघल जी की पत्नी श्रीमती देवा सिंहल का निधन 30 दिसम्बर 2019 को हो गया।

6. आर्य समाज भीलवाड़ा के प्रधान श्री विजय कुमार शर्मा जी के पिता श्री रतिराम शर्मा जी का निधन 93 वर्ष की आयु में दिनांक 30 दिसम्बर 2019 हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 31 दिसम्बर 2019 को रामघाट सिलीगुड़ी में वैदिक रीति से किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दुःख को सहन करने करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।

## संस्कार शिविर का भव्य समापन

आर्यवीरदल राजस्थान द्वारा अजमेर में 24 दिसंबर से 31 दिसंबर 2019 तक गुलाब बाड़ी में राधे रानी गार्डन व ईस्ट पॉइंट स्कूल में संचालित आवासीय आदर्श युवा निर्माण शिविर का भव्य समापन समारोह व्यायाम प्रदर्शन के साथ 10:00 बजे प्रारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में परोपकारिणी सभा के मंत्री कन्हैयालाल आर्य तथा कोषाध्यक्ष सुभाष नवाल, विशिष्ट अतिथियों में डॉ. गोपाल बाहेती कार्यकारी प्रधान महर्षि दयानन्द निर्माण स्थली भिनाय कोठी डॉ. रूपा गोयल, डॉ. धीरज उपाध्याय, अधिवक्ता घनश्याम सैनी, ललिता सैनी, आर्य समाज आदर्श नगर से मंत्री सुबोध शिवहरे व अन्य पदाधिकारी आदि रहे। यज्ञ के ब्रह्म भवदेव शास्त्री (संचालक– आर्यवीर दल राजस्थान), गगेन्द्र आर्य (मंत्री–आर्यवीर दल राजस्थान) तथा चांदराम (मंत्री आर्य समाज केसरगंज अजमेर) रहे।

इस अवसर पर जिला संचालक विश्वास पारीक एवं जिला संचालिका सुलक्षणा शर्मा ने मंच का संचालन किया तथा कुरुक्षेत्र से पधारे संत विदेह योगी की अध्यक्षता में व्यायाम प्रदर्शन में लाठी भाला तलवार रस्सा मलखंब योग आसन प्राणायाम सूर्य नमस्कार भूमि नमस्कार आदि के अभ्यास को सामूहिक व्यायाम प्रदर्शन के द्वारा प्रस्तुत किया गया, प्रदेशभर के कई जिलों से लगभग 100 की संख्या में भाग लेने वाले आर्यवीर व वीरांगनाओं ने 7 दिवस तक इस आवासीय शिविर में संस्कारों व यज्ञ का प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लिया।

शिविर में हुई लिखित प्रायोगिक आदि परीक्षाओं में उत्तीर्ण एवं प्रथम द्वितीय तृतीय एवं विशिष्ट सम्मान से पुरस्कृत हुए आर्यवीर एवं आर्य वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र तथा पुरस्कार प्रदान किया।

स्थानीय प्रबंधन कमेटी में सोहनलाल सोलंकी, अंजना राठौड़, भरत इंदौरा, राजेश गढ़वाल, आचार्य हेमन्त आदि रहे।

ध्वजगान के बाद ध्वजावतरण किया गया तथा शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्यवीर शिक्षक सुरेन्द्र आर्य पाली, मनोहर आर्य चापानेरी, अंशु कुमावत अजमेर, सुनील कश्यप अजमेर, अखण्ड प्रताप सिंह बीकानेर, मानसिंह अजमेर आदि रहे।

आर्य वीरांगना शिक्षिका ऋतु आर्या, श्वेता आर्या फरीदाबाद, पूजा रावत, कोमल, विमल, सुरभि, प्रियंका, सपना अजमेर आदि रहीं।

**जिला संचालक**
**डॉ. विश्वास पारीक**

## संस्कार शिविर का भव्य समापन

## आर्य समाज रावतभाटा ने दो संस्कृत विद्यालयों को बांटी 130 जर्सियां

आर्य समाज रावत भाटा से 55 किलामीटर दूर भैंसरोडगढ़ पंचायत समिति में स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय भांडा कुड़ी एवं राजकीय प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय मजरा छावनिया में 130 ऊनी जर्सियां आर्य समाज के तत्वावधान में वितरित की गईं। मोहिनी देवी, रमेश चन्द्र भाट ने भी सहयोग प्रदान किया। प्रधान नरदेव आर्य ने सभी दानदाताओं का आर्य समाज की ओर से आभार प्रकट किया। मंत्री ओम प्रकाश आर्य ने नैतिक शिक्षा के दो सैट दोनों विद्यालयों को भेंट किया और गायत्री मंत्र, भोजन मंत्र प्रतिदिन बोलने को कहा। विद्यालय के प्राधानाचार्य सत्यप्रकाश मीणा, गिरिराज नापित ने आर्य समाज के इस सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद दिया। पिछले कई सालों से इस विद्यालय में बच्चों को सहयोग किया जा रहा है।

नरदेव आर्य
उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

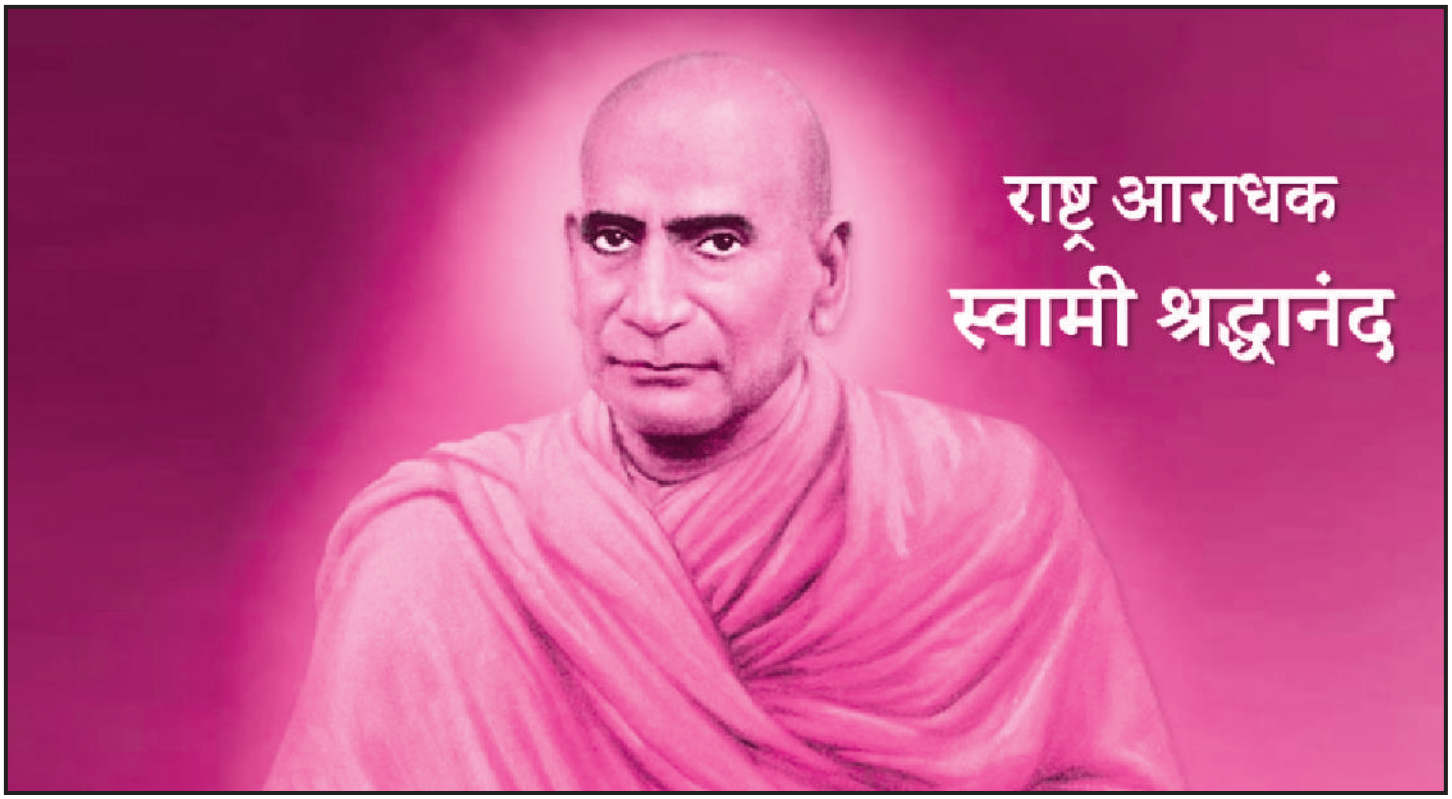


## स्मृति शेष आचार्य सत्यानंद वेदवागीश

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक देवेन्द्र कुमार, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषकः- सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
हनुमान ढाबे के पास , राजा पार्क, जयपुर-302004

खाता धारक का नाम : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
यूको बैंकA/c No.:18830100010430 , जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित



विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।